लक्ष्मण-रेखा

वह बार-बार अपनी देख रहा था। इम्फाल से वह डिमापुर के लिए सुबह सात बजे ही टाटा सूमो गाड़ी पकड़कर निकल लिया था। उम्मीद थी कि शाम-शाम तक वह डिमापुर पहुँच जायेगा। मगर कोहिमा के पास एक जगह पहाड़ धसकने से मलबे के रूप में मिट्टी-पत्थर रास्ते में गिर-बिखरकर उसे जाम कर गये थे। वह तो गनीमत थी कि दिन का वक्त था और बीआरओ वाले मलबा साफ करने के लिए मजदूरों के दल और तीन-तीन जेसीबी मशीनों के साथ समय पर पहुँच गये थे। इतनी शीघ्रता करने के बावजूद मलबा साफ करने में चारेक घंटे तो लग ही गये थे।

पूरे बारह घंटे लगे थे उसे इम्फाल से डिमापुर आने में। उसने घड़ी देखी।रात्रि के आठ बजने वाले थे। जबकि डिब्रुगढ़ से आनेवाली राजधानी एक्सप्रेस ग्यारह बजे रात में मिलती। उसने चैन की साँस ली। कोहिमा के पास हुए भूस्खलन से हुए जाम ने उसे डरा ही दिया था कि यदि समय से वह डिमापुर नहीं पहुँचा तो ट्रेन छूट जाने पर वो क्या करेगा। टाटा सूमो से उतरते ही वह ऑटो कर स्टेशन भागना चाहता था। अब ऑटोवाला चाहे जो किराया ले, उसे शीघ्रताशीघ्र पहुँचना ही है। संयोग की बात कि गाड़ी से उतरते वाले उस युवक को भी उसी तरह से गाड़ी पकड़ने की हड़बड़ी थी और इस प्रकार ऑटो शेयर कर डिमापुर स्टेशन पहँच गया था।

वह जब से दिल्ली से इम्फाल आया है, उसे परेशानी ही परेशानी झेलनी पड़ रही है।

वह दिल्ली में रहकर वहाँ के एक संस्थान से जनसंचार और पत्रकारिता का तीन वर्षीय डिप्लोमा की पढ़ाई कर रहा है। वहीं वह एक साहित्यिक संस्था 'जन-संवाद' से जुड़ गया था। इससे उसे फायदा यह हुआ कि उसकी साहित्यिक रुचि विकसित-परिष्कृत होने लगी थी। अनेक वरिष्ठ, कनिष्ठ रचनाकारों से उसका जुड़ाव हो गया था। मणिपुरी भाषा में वह पहले से लिखता रहा था। मगर अब उसकी कविताएँ हिन्दी मे भी छपने लगी थीं। कुछ चर्चित मणिपुरी रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद कर उसने यहाँ अपनी साख और धाक भी जमा ली थी।

संस्थान के अध्यक्ष रघुबीर जी विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर थे और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी साहित्यिक पहचान रखते थे। वह अपनी नौकरी के सिलसिले में प्रोबेशन पर दो साल इम्फाल में भी रह चुके थे। इसलिए उन्हें मणिपुर के इतिहास-भूगोल की गहन जानकारी थी। सचिव श्रीकांत भी किसी मंत्रालय में अधिकारी थे। इसी प्रकार अन्य सदस्य भी या तो किसी अच्छे पद पर थे, या वहाँ से अवकाश ग्रहण कर चुके थे।

इस संस्था का यह नियम था कि इसकी वार्षिक बैठक किसी अन्य राज्य में आयोजित किये जाते थे, ताकि संस्था का प्रचार-प्रसार हो। इस वर्ष यह तय हुआ कि वार्षिक बैठक पूर्वोत्तर करके गुवाहाटी में किया जाये। मगर अध्यक्ष रघुबीर जी ने यह प्रस्ताव दिया कि इसका आयोजन इम्फाल में किया जाये।

अब उनकी बात को कौन काटता ? सिर्फ कोषाध्यक्ष अमित वर्मा ने इसपर आपत्ति की कि इम्फाल दुर्गम शहर है। बहाँ इसका आयोजन कैसे होगा। इस पर रघुबीर जी ने उन्हें झिड़क दिया- 'अरे, अपना नीलमणि

सिंघा है ना! वह सारी व्यवस्था कर और सँभाल लेगा। चिंता क्यों करते हो?"

'मगर मैं तो यहाँ दिल्ली में हूँ" उसने प्रतिवाद किया- 'मुझे इस प्रकार का अनुभव भी नहीं है।"

'जब काम करोगे,तो सारा अनुभव हो जायेगा" रघुबीर जी अपनी अफसरी झाड़ते हुए बोले- 'तुम यहाँ से दसेक दिन पहले इम्फाल चले जाना। संस्था की तरफ से तुम्हें इम्फाल आने-जाने का भाड़ा मिल जायेगा। अभी हम तुम्हारा राजधानी एक्सप्रेस में आरक्षण करा देंगे। तुम बस अभी से इम्फाल के साथी-सहयोगियों से विचार-परामर्श आरंभ कर दो।"

और इस प्रकार उसका इम्फाल जाने का कार्यक्रम बन गया था।

दिल्ली से इम्फाल जाने के दो रास्ते हैं। एक तो नागालैंड के डिमापुर होकर जाना ज्यादा सरल था। मगर उसमें उसे आरक्षण नहीं मिल सका। फिर उसी की सलाह पर अगरतला जानेवाले राजधानी एक्सप्रेस में उसका असम के बदरपुर स्टेशन तक का आरक्षण करा दिया गया। बदरपुर से उसे इम्फाल जाने के लिए टाटा सूमो गाड़ी पकड़कर बारह घंटे की यात्रा करनी थी।

अब ओखल में सिर दिया,तो मूसल से क्या डरना! यही मानकर उसने हामी भर ली थी। एक आंतरिक खुशी ये भी थी कि पूरे डेढ़ साल बाद वह मुफ्त में इम्फाल में अपने घर घूम आयेगा।

दिल्ली से राजधानी एकसप्रेस से चालीस घंटे की यात्रा कर जब वह बदरपुर पहुँचा, तबतक रात हो चुकी थी। चार बजे सुबह की लालिमा दिखने लगी, तो वह लपककर स्टेशन से बाहर निकला। मगर यहाँ उसे पता चला कि इम्फाल जाने के लिए तो शिलचर से ही टाटा सूमो मिलेगा। उसने बिना देर किये वहीं एक बस में सवार होकर एक घंटे की यात्रा कर शिलचर पहुँच गया था।

दरअसल मणिपुर का इम्फाल घाटी शेष भारत से दो रास्तों से जुड़ा है। ब्रम्हपुत्र घाटी और बराक घाटी से गुजरने वाले ये दोनो ही रास्ते ऊँचे-ऊँचे दुर्गम पहाड़ों, गहरी घाटियों, सैकडों छोटी-बड़ी नदियों और घने जंगलों से होकर गुजरता है, जहाँ भूस्खलन या पहाड़ों का टूट-टूटकर गिरना आम बात है। उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र होने के कारण यहाँ के चप्पे-चप्पे पर पुलिस, अर्द्धसैनिक बल और सेना का पहरा है। इन्हीं कुछ वजहों से इधर से होकर नियमित बसें नहीं चलतीं। ले-देकर बस कुछ टाटा सूमो गाड़ियाँ हैं, जिसे इधर के बेरोजगार युवा जान हथेली पर रख चलाते हैं। हवाई यात्रा करनेवाले क्या जानें कि इन रास्तों से होकर गुजरना कितना विषम और कष्टप्रद है।

टाटा सूमो पर बैठकर उसने चैन की साँस ली। एक छोटे से सीट पर सिकुड़कर बैठते ही उसे अपनी राजधानी एक्सप्रेस की शाही यात्रा याद आई, तो वह मन-ही-मन मुस्कुरा उठा। अभी उसे इसी तरह बैठकर बारह घंटे की यात्रा करनी है। और इस बीच दिन में ही कब उसकी आँख झपक पड़ी, उसे पता भी नहीं चला।

शाम छः बजे जब वह टाटा सूमो से इम्फाल शहर में उतरा, तो उसका अंग- प्रत्यंग अकड़ा हुआ था। गाड़ी से उतरते ही उसने अपने हाथ-पैर फटकारे। फिर अपना एयर बैग उठाकर एक ऑटो में बैठ अपने घर की ओर रवाना हो गया।

पूरे डेढ़ साल बाद वह अचानक अपने घर आया था, इसलिए सभी को आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता ही हुई।

अगले दिन वह अपने मित्र दिलजीत सिंघा से मिला, जो अबतक बेरोजगार भटक रहा था। और दिन काटने के लिए छुटभइया टाइप की नेतागिरी करता था। जब उसने उसे सारी बात बताई, तो वह खुश होकर बोला- 'ये समारोह का आयोजन करना कौन बड़ी बात है। जब जेब में पैसा हो, तो ऐसे-ऐसे अनेक आयोजन किये जा सकते हैं। बस तुम बजट बता दो। वैसे ये दिल्लीवाले हैं। पैसा उनके हाथ के मैल समान समझो। खुलकर खर्च करो और ऐश करो। तीन साल पहले तुमने देखा ही था कि दिल्ली की एक राजनैतिक पार्टी ने इसी इम्फाल शहर में एक समारोह का आयोजन किया था, जिसका सारा दायित्व मैंने ही तो उठाया था।"

'मगर यह एक साहित्यिक आयोजन है" उसने शंका प्रकट की- 'वे शायद इसमें उस प्रकार खुलकर खर्च नहीं कर पाएँ?"

'वो दिल्ली से इतनी दूर हवाई जहाज से आएँगे और खर्च नहीं करेंगे, यह हो नहीं सकता" दिलजीत सिंघा ने प्रतिवाद किया- 'तुम बस कार्यक्रम की रूपरेखा तो बताओ।"

और उसने कार्यक्रम की रूपरेखा बता दी थी।

'बस, सब ठीक है" दिलजीत बोला- 'इसमें एक सांस्कृतिक कार्यक्रम जोड़ दो। जरा दिल्लीवाले भी तो जानें कि मणिपुर की समृद्ध संस्कृति कैसी है!"

'मगर इतना पैसा आयेगा कहाँ से, जो मैं कलाकारों का भारी-भरकम शुल्क दे सकूँगा" उसने शंका प्रकट की- 'उन्होंने सिर्फ पचास हजार का खर्च बताया। और तुम पाँच लाख का बजट बता रहे हो?"

'अरे, इतना खर्च नहीं होगा" दिलजीत उसे समझाते हुए बोला- 'तुम इतना घबराते क्यों हो! तुमने यह भी तो बताया था न कि वे बोले हैं कि कुछ कम-ज्यादा खर्च हो जाए, तो चिंता नहीं करने का। जब समारोह शानदार होगा, तो वे रूपये देने में पीछे नहीं हटेंगे। अरे यार, वे दिल्लीवाले बड़े लोग हैं। उनके पास इतना पैसा है कि उन्हें ही नहीं पता कि खर्च कैसे करनी है। उनके पास पैसों की कमी थोड़े ही है, जो तुम चिंता करते हो। जमकर खर्च करो और बिल, वाउचर, कैशमेमो वगैरह उन्हें पकड़ा दो। वो सारा भुगतान करेंगे ही, करेंगे।

'तीन साल पहले तुमने खुद देखा था कि इन दिल्लीवालों के कहने पर ही मैंने यहाँ एक राजनीतिक सम्मेलन के आयोजन का जिम्मा मुझपर ही था। उसमें मैंने खुले हाथों खर्च किया था। और अंत में सारा बिल वगैरह उन्हें पकड़ाकर पाई-पाई वसूल ली थी। उनमें से ही कुछ पैसे बचाकर तुमलोगों को मैंने अलग से शानदार पार्टी भी दी और अपने लिए एक नई बाइक भी खरीदी थी।"

'तुमने जिस आयोजन का संयोजन किया, उसमें राजनीतिक लोग आये थे। और ऐसे लोगों के पास पैसों की कोई कमी नहीं रहती। मगर यह तो साहित्यिक आयोजन है। उनके पास इतना पैसा कहाँ होगा?"

'अरे यार, दिल्ली में पूरे देश से पैसा जाता है। उनके पास पैसा नहीं होगा, तो किसके पास होगा! दिल खोलकर खर्च करो। इस बहाने इम्फाल में कुछ मनी ट्रांजिक्शन हो जायेगा। मणिपुरी कलाकारों का भी कुछ खर्चा-पानी निकल आयेगा।"

इम्फाल शहर का प्रसिद्ध कांगला पैलेस।

उसके एक लॉन में बैठकर वह दोनो बात कर रहे थे। उसे निहारते हुए वह बोला- 'फिर भी चिंता तो होती ही है। उनलोगों ने स्पष्ट कहा है कि इस साहित्यिक आयोजन में सावधानी के साथ खर्च करनी है।"

'तो हम ही कौन सा फाइव स्टार होटल में व्यवस्था कर रहे हैं। सारा आयोजन तो हम एक स्कूल कैम्पस में करनेवाले हैं। हाँ, पंडाल और मंच थोड़ा भव्य होगा। और खानपान की भी समुचित व्यवस्था रहेगी।" कांगला पैलेस के कंगूरे को निहारते हुए दिलजीत बोला- 'सभी हवाई जहाज से आ रहे हैं। और ऐसे वीआईपी लोगों को तुम नमक-भात तो खिला नहीं सकते ना! अरे, उनके लिए बढ़िया खाने-पीने-रहने और मनोरंजन की भी व्यवस्था करो। इसलिए तो मैंने रॉयल कैटरर्स से बात कर रखी है। उन दिल्लीवालों के लिए यह पिकनिक समान है। इसलिए तो अंत में सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी व्यवस्था है, ताकि वह पूरी तरह खुश और संतुष्ट होकर जाएँ। खुश और संतुष्ट रहेंगे, तो सारा भुगतान हँसते-हँसते कर जायेंगे।"

दिलजीत और वह जिस प्राइवेट स्कूल में पढ़कर 12वीं की परीक्षा पास किये थे, उसका कैम्पस बहुत बड़ा था। आए दिन वहाँ जलसे, उत्सव आदि आयोजित किये जाते थे, ताकि स्कूल मैनेजमेंट कुछ अतिरिक्त आय भी कर सके। उन्होंने प्रिंसिपल से बात की थी और उसने विद्यालय परिसर में इसका आयोजन करने के लिए सहमति दे दी थी। सेकेंड सटरडे और सनडे को वैसे भी छुट्टी ही रहती थी। और इसी हिसाब से इसका आयोजन होना था। आखिर इसमें सभी का भला था। फिर एक तो विद्यालय परिसर में इस प्रकार के राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक आयोजन होने से विद्यालय का नाम और प्रचारित होता। दूसरे विद्यालय फंड को किराये के रूप में रोकड़ा मिलता।

इम्फाल के रॉयल कैटरर्स ने जो पंडाल बनाया था, उसका मंच बिलकुल मणिपुरी शैली के भव्य राजसी दरबार का सा था। उसके आगे पहली कतार में सोफे थे। उसके पीछे गद्दियाँ लगीं शानदार दो सौ कुर्सियाँ थीं। लाइट एंड साउंड सिस्टम अत्याधुनिक रूप में शामिल थे। आखिर इस कार्यक्रम में राज्य के राज्यपाल और कुछ मंत्रियों के शामिल होने की भी बात निमंत्रण-पत्रों में छपे थे।

शुक्रवार की शाम को दिल्ली की फ्लाइट से लगभग सौ लोग उतरे थे। विद्यालय के तीन हॉल को खाली कर और साफ-सुथरा कर उसमें गद्दे-तकिया लगाकर बढ़िया चादर बिछाये गये थे। दो में पुरूष और एक में महिला आगंतुकों के रहने की व्यवस्था थी। मगर उसने देखा कि बीसेक लोग उस हॉल से पलायन कर इम्फाल के विभिन्न मँहगे होटलों में अपना ठिकाना बना चुके थे। चाय-नाश्ता वगैरह कर वह अपने-अपने होटलों में चले गये थे। दिलजीत ने ठीक कहा था कि इन दिल्लीवालों के पास पैसों की कमी नहीं है। हर चीज की चाहत होती है इन्हें और इसका मोल भी चुकाना जानते हैं। लेकिन, शाम होते ही वे सभी भोजन के लिए विद्यालय परिसर में आ डटे थे। अरे भाई, जब इतने मँहगे होटलों में ठहरे हो, तो खाना भी उधर ही खा लेना था। मगर वह भोजन पर ऐसे टूट पड़े थे, जैसे कभी कुछ ढंग का खाया ही न हो! रॉयल कैटरर्स कहाँ पचास लोगों के भोजन की व्यवस्था में जुटा था। और अब वह सवा सौ लोगों का भोजन बना रहा था।

अगले दिन सभी नाश्ते पर हाजिर थे और हँसी-मजाक करते चाय-नाश्ता कर रहे थे। ठीक दस बजे कार्यक्रम आरंभ हुआ, जिसका उद्घाटन राज्य के दूसरे नंबर के एक वरिष्ठ मंत्री ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में

राज्यपाल आये थे। और इनके साथ इनका पूरा ताम-झाम और अमला था, जो कार्यक्रम समाप्ति के बाद भोजन पर टूट पड़ा था। मगर यह बाद की बात, अभी तो वह मंच की व्यवस्था में लगा था। वह जानता था कि इस साहित्यिक संस्था के अध्यक्ष और सचिव की पहुँच और पकड़ राजनीतिक गलियारों में भी है। और इम्फाल जैसे छोटे राजधानियों के राज्यपाल और मंत्री आदि न सिर्फ दिल्ली आते-जाते हैं, ऐसे आयोजनों की तलाश में भी रहते हैं, क्योंकि ऐसे आयोजन यहाँ कभी-कभार ही होते हैं। इम्फाल के अनेक विद्वान भी इस समारोह में आमंत्रित थे। और निःसंदेह इससे कार्यक्रम की भव्यता और गरिमा बढ़ गई थी। सरकारी और गैर सरकारी गाड़ियों से स्कूल परिसर पट गया था। कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद विद्यालयीन छात्रों द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत किया गया। फिर स्वागत भाषण के उपरांत महान लोगों की भाषणबाजी आयोजन शुरू हुआ। दोपहर में भोजन सत्र के बाद साहित्यिक आयोजन शुरू हुआ, तो शाम छः बजे समाप्त हुआ।

नाश्ते के अवकाश के बाद सात बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन शुरू हुआ, तो नौ बजे तक चलता रहा। अब इम्फाल मणिपुर की राजधानी है, तो यहाँ राज्य स्तर के क्या, राष्ट्रीय स्तर के कलाकार होंगे ही। इनमें से अधिकांश ने उससे आग्रह कर अपना कार्यक्रम रखवाया था। बाँसुरी से लेकर मृदंग-पखावज आदि बजाने वाले वादकों और नृत्य-मंडलियों की अनेक श्रेणियाँ थीं, जिन्होंने मणिपुर की विशिष्ट शैली वाली रासलीला, कृष्णलीला से लेकर युद्धकला तक की प्रस्तुतियाँ दी थी। एक दल ने तो बाकायदे मिजोरम का बाँस -नृत्य और असम का बिहू-नृत्य भी प्रस्तुत किया था।

सभी ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी कि उन्हें एक मंच पर एक साथ इतने सारे मणिपुरी संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम देखने को मिल गये थे। राज्यपाल और मंत्री महोदय ने भी इस भव्य आयोजन कराने के लिए संस्था को पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये का अनुदान तत्काल दे दिया था। अगले दिन के अखबारों में इसकी बड़ी-बड़ी सचित्र रपटें छपी थीं। टी वी चैनलों में उसके समाचार भी आ गये थे। इससे स्कूल प्रबंधन एक तरफ बहुत खुश था कि उसके स्कूल का नाम हुआ है, दूसरी तरफ नाराज भी था कि उसके स्कूल के छात्रों को सांस्कृतिक कार्यक्रम में मौका नहीं दिया गया।

दिक्कत तब शुरू हुई, जब सभी कार्यक्रमों के भुगतान करने के बिल-रसीद आदि आने शुरू हुए। उसे एकदम से अंदाजा नहीं था कि कलाकारों का शुल्क भी इतने उच्च स्तर का होगा। दिलजीत ने उसे झिड़कते हुए कहा- 'अरे सारे बिल रखते जाओ। अगले दिन अध्यक्ष और सचिव को सबकुछ देकर समझा देना। ये दिल्लीवाले लोग हैं। सारे पैसे मिल जायेंगे।"

वह फँस गया, कि फँसा दिया गया, यह वह तय नहीं कर पा रहा था। कितने उत्साह के साथ उसने इस समारोह के आयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी की थी। उसका नाम लोगों की जुबान पर था। सभी कलाकारों के कार्यक्रमों की रसीदें उसके पास थीं और सभी बड़ी उम्मीदों के साथ उसे देख रहे थे कि वह भी तो अब दिल्लीवाला बन चुका है। और कि उसे पैसों की क्या कमी होगी! रॉयल कैटरर्स वालों ने उसे समय दिया था कि वह जल्द ही भुगतान कर दे। हड़बड़ी तो उसे भी थी। क्योंकि दिल्ली में उसकी पढ़ाई का सत्र अगले ही सप्ताह शुरू होने वाला था।

और उसने तीन दिन बाद के पूर्वोत्तर राजधानी एक्सप्रेस में डिमापुर से दिल्ली के लिए आरक्षण करा रखा था।

'पूरे डेढ़ लाख की देनदारी है' वह माथे पर हाथ धरकर बुदबुदाया- 'कैसे पूरा करेगा वह? लगता है मुझे यह देनदारी पूरी करने के लिए अपनी बाइक बेचनी पड़ेगी। लेकिन बाइक बेचने के बाद भी तो पैसा पूरा नहीं हो रहा!'

रात में भोजन के दौरान ही उसने अध्यक्ष और सचिव को बिलों के बाबत बताया, तो सचिव श्रीकांत चिहूँक कर बोले- 'हमने तो साहित्यिक आयोजन किया था। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम कराने की क्या जरूरत थी। आप तो इसे राजनीतिक रैली समान समझ अनाप-शनाप खर्च क्यों कर गये?"

'अनाप-शनाप! आप लोक गीत-संगीत-नृत्य को अनाप-शनाप मानते हैं?"

'अरे नहीं भाई! वो ठीक है कि आपने उसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम डाल दिया। निःसंदेह कार्यक्रम तो बहुत अच्छा रहा। समारोह में भीड़ भी रही। इम्फाल से सारे लोग उठकर चले आये हों जैसे कार्यक्रम में! वहाँ दिल्ली में साहित्यिक कार्यक्रमों का हाल आप देख ही चुके हैं कि कितनी निराशा रहती है।" अध्यक्ष रघुबीर जी बोले- 'इस मामले में मणिपुर की प्रशंसा करनी ही होगी कि सांस्कृतिक मामलों में यह एक धनी प्रदेश है। लेकिन खानपान पर बहुत खर्च हो गया लगता है। वित्तीय अनुशासन भी तो होना चाहिए। ऐसा करें कि आप कोषाध्यक्ष अमित वर्मा जी से बात कर लें।"

अमित वर्मा इस कार्यक्रम में सपरिवार आये थे। वह इसमें सिर्फ शुरूआती दौर के वक्त रहे और फिर सारा दिन इम्फाल की सड़कें नापते, खरीददारी में व्यस्त रहे थे। इम्फाल स्थित आयकर विभाग में उनका कोई रिश्तेदार पोस्टेड था, जो उन्हें परिवार के साथ इम्फाल के दर्शनीय स्थल घुमाता और मार्केटिंग भी कराता रहा था। पहले वह कांगला पैलेस गये। फिर वहाँ से 'इमा मार्केट' का भ्रमण करते बड़ी खरीदारी की। इसके बाद श्री गोविंदजी मंदिर, मणिपुर स्टेट म्यूजियम, रेड हिल वगैरह भी हो आये थे और अब उसका जिक्र जिस-तिस से करते फिरते थे। रात में भी संभवतः सांस्कृतिक कार्यक्रम के समापन के आसपास ही, भोजन के वक्त अपने पूरे दल-बल के साथ उपस्थित हो पाये थे। उन्हें अब अगले दिन बर्मा बोर्डर देखने जाना था। उनका एक मित्र यहाँ इम्फाल में सीमा सुरक्षा बल का कमांडेंट था और उन्होंने ही शायद उनके उधर जाने की व्यवस्था कर रखी थी। वह इस समय अपने इसी कमांडेंट मित्र के साथ बर्मा बोर्डर की रोमांचक चर्चा में व्यस्त थे कि उसने अपना रोना रोते उन्हें सारी बात बताई।

'हमने तो साफ-साफ कह दिया था कि हम अधिकतम पचास हजार तक खर्च कर सकते हैं। और आप डेढ़ लाख का बिल दे रहे हैं। हमने आपके दिल्ली से इम्फाल आने-जाने का टिकट भी करा दिया था। सो भइया, कहाँ से आयेगा पैसा !" वह उठकर बैठते हुए बोले- 'यह तो शुद्ध साहित्यिक आयोजन था। और आप बिना विचार-विमर्श किये इतना भारी भरकम अनुष्ठान डाल दिये ! चलो, कोई बात नहीं। सभी का मनोरंजन हुआ। सभी लोग अभिभूत हुए। मगर इतना पैसा आयेगा कहाँ से? हमें भी ऑडिट वालों को जवाब देना पड़ता है न सिंघा साहेब ! जाइये अध्यक्ष और सचिव महोदय से ही बात कीजिये।"

'उन्होंने मुझे आपसे बात करने को कहा है।"

'लो कर लो बात" वह व्यंग्यात्मक लहजे में बोले- 'मेरे पास पैसा रहेगा, तब न दूँगा। वहाँ दिल्ली में पैसे के नाम पर सभी अपना पल्ला झाड़ लेंगे।"

'मगर वहाँ दिल्ली में आपने भी तो कहा था कि कुछ अधिक खर्च हो जाए, तो चिंता की कोई बात नहीं। हम उसे पूरा कर देंगे। बस कार्यक्रम शानदार होना चाहिए।"

'अरे, उसका मतलब दो-चार हजार से था" वह पुनः व्यंग्यात्मक हँसी हँसते हुए अपने कमांडेंट दोस्त से बोले, जो उन्हीं के साथ सपरिवार इस रात के भव्य भोज में शामिल होने आ गये थे- 'अब इतनी बड़ी रकम कोई कहाँ से लाये! सभी के दिमाग में यही बात रहती है कि दिल्ली में रुपयों की बरसात होती है। ये तो हमीं जानते हैं कि हम फंड की व्यवस्था किन मुश्किलों के बीच कैसे कर पाते हैं!"

'अमित जी, रात बहुत हो गई है" कमांडेंट साहब अपनी घड़ी देखते हुए बोले- 'कल सुबह छः बजे तक निकल जाना होगा, तभी हम वापस लौट सकते हैं।"

'अरे अमित जी, क्या बात हो रही है" तभी उधर अध्यक्ष महोदय घूमते हुए आ कर बोले- 'अरे, इस नौजवान की समस्या दूर करो भाई। बड़ी मेहनत करी है इसने!"

'मगर सर, इसमें मैं क्या कर सकता हूँ" वह परेशानहाल बोले- 'बिना पूछे-समझे इतनी बड़ी खर्च कर डाली। हम अब कहाँ से व्यवस्था कर पायेंगे?"

'अरे नौजवान, तुम हमारे साथ कल घूमने निकल चलो। इनकी तो परसों की फ्लाइट है। क्योंकि इन्हें बर्मा बोर्डर देखने जाना है। इनके साथ चले चलना। ये जरूर कोई रास्ता निकाल देंगे।" वह हँसते हुए बोले- 'मैं बुढ़ा आदमी इन पहाड़ी रास्तों पर कहाँ चल पाऊँगा। मेरी चूँकि कल शाम की फ्लाइट है, इसलिये रास्ते में पड़नेवाले ऐतिहासिक स्थल खोंगजोम तक ही जाऊँगा। बड़ा नाम सुना है उसका। पूरे दो साल रहा इम्फाल में। मगर सरकारी व्यस्तता ऐसी कि कभी घूम नहीं पाया। अब आया हूँ, तो वहाँ का युद्ध स्मारक देख मणिपुरी वीरों को प्रणाम कर आऊँगा। रास्ते में हम तुम्हारी समस्या पर डिस्कस कर कोई रास्ता निकाल लेंगे।"

अगले दिन वह उनलोगों के साथ हो लिया। विश्वविद्यालय वालों ने अध्यक्ष महोदय के खोंगजाम जाने के लिए दो गाड़ियों की व्यवस्था कर रखी थी। तीसरी गाड़ी कमांडेंट महोदय की थी, जिसमें कोषाध्यक्ष महोदय का परिवार था। घंटे भर में ही वह खोंगजोम पहुँच गये थे। और वह उनलोगों को खोंगजोम का युद्ध स्मारक दिखाते बता रहा था कि किस प्रकार अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति और धोखे से मणिपुर राज्य को 1891 ई0 में हस्तगत कर लिया था। इसी स्थान पर मणिपुरी सेनापति पाओना ब्रजबासी ने किलेबंदी कर अंग्रेजों को मुँहतोड़ जवाब दिया था। लेकिन मिजोरम, बर्मा और शिलचर से आ चुके विशाल ब्रिटिश सैन्य फौजों ने उन्हें घेर लिया था, जिससे पाओना ब्रजबासी अपनी अपूर्व वीरता दिखाते अपनी सेना के साथ शहीद हो गये थे। मीतै गुरू उस युद्ध के एक सैनिक थे, जो बच रहे थे। मणिपुर के पतन से उनका तन-मन विदीर्ण हो चुका था। इसलिये वह उन सभी घटनाओं का मार्मिक वर्णन अपने गीतों में ढालकर ढोल बजाते गाते फिरने लगे।

उनकी यह परंपरा अभी तक चली आ रही है। और कि प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को 'खोंगजोम दिवस' का आयोजन भी किया जाता है।"

'अत्यंत रोचक और मार्मिक है यह" अमित वर्मा बोले- 'सारी कहानी अपने तरफ की जैसी है। लेकिन हम इस बारे में कुछ नहीं जानते।"

'और इसलिये तो मैंने यहाँ कार्यक्रम रखवाया था, ताकि आपलोग कुछ जान सको। आपलोग विदेश घूम आओगे। लेकिन अपने देश के सुदूरवर्ती इलाकों में जाने से डर लगता है" अध्यक्ष जी बोले- 'लेकिन जिस काम के लिए ये नौजवान आया है, उसे तो पूरा करो।"

'मैंने रात ही हिसाब-किताब कर मिलान कर लिया था" वर्मा जी अपना बटुआ निकालते हुए बोले- 'इन्होंने एक लाख पचपन हजार का बिल दिया है। मैं खींच-तानकर एक लाख पंद्रह हजार तक का भुगतान कर दूँगा।"

'और बाकी के चालीस हजार" उसके मुख से बेसाख्ता निकल पड़ा।

'अब सारी गलती हमीं पर ना थोपो" वर्मा जी रुपये गिनते हुए बोले- 'वह तो गनीमत रही कि पचास हजार का अनुदान मिल गया। नहीं तो हम ये भी नहीं दे पाते। जितना मिल रहा है, रख लो। और सभी से अपने -अपने बिल में कटौती करने को कहना। काम हो जायेगा।"

वह अध्यक्ष जी का मुँह देखने लगा। वह उसे समझाते हुए बोले- 'गलती तो हुई ही है, जो तुमने इस भारी-भरकम सांस्कृतिक कार्यक्रम के संबंध में जानकारी नहीं दी और बिना पूछे इतना सारा कुछ खर्च कर डाला। इन्हें भी उधर मंत्रालय में जवाब देना होता है। इंटरनल ऑडिट वाले भी हजार सवाल करते हैं। कुछ सोच-समझकर ही अधिकतम खर्च की लक्ष्मण-रेखा नियत की गई है, जिसे तुम पार कर गये।"

बर्मा बोर्डर चलने के लिए ड्राईवर ने अपनी गाड़ी का इंजन स्टार्ट कर दिया था और बार-बार हॉर्न बजा रहा था। उसने रुपये रख लिये। और इम्फाल वापसी के लिये रघुबीर जी की गाड़ी में आ बैठा। कोषाध्यक्ष महोदय की गाड़ी उन्हें लेकर पहले ही बर्मा बोर्डर की ओर कूच कर चुकी थी। उसने विचार किया कि उसके पास जो बाइक है, उसे बेच कर बाकी खर्च चुका देगा। वह तो यहाँ रहता नहीं, सो उसकी जरूरत भी क्या है! और इस प्रकार वह सभी देनदारियों से मुक्त हो जायेगा।

इम्फाल में वह 'इमा मार्केट' के पास आकर उतर गया। और वहीं उसने दिलजीत को फोन कर बुला लिया।

'क्या सोच रहे हो" अचानक नीलमणि आकर उसके पास बैठते हुए बोला- 'कहाँ खो गये तुम?"

'कहाँ खोऊँगा! बस इसी देनदारी के बारे में सोच रहा था। पहले तो वह पचास दे ही चुके थे। अभी सिर्फ पैंसठ हजार ही दे सके। बाकी चालीस हजार रुपये के लिए अपनी बाइक बेच दूँगा। एक तो मुझे डेढ़-दो साल वहीं दिल्ली में अपनी 'मास कॉम' की पढ़ाई के लिए रुकना ही है। ऐसे में यह बाइक यहाँ पड़े-पड़े खराब ही हो जायेगी। बाइक का चालीस हजार मिल जायेगा ना?"

'क्या यार! एक मैं था, जो उन दिल्लीवालों के लिए कार्यक्रम कराया, तो जमकर खर्च किया। तुमलोगों को शानदार पार्टी दी। और उसी से बचे पैसों से लगे हाथ नई बाइक भी खरीद ली थी।" नीलमणि बोला- 'और एक तुम हो, जो अपनी बाइक बेचने में लग लिये! लाओ वे रूपये, वह मुझे दो। मैं कुछ कम-ज्यादा करके सबका भुगतान कर दूँगा। बाइक बेचने की जरूरत नहीं। अन्यथा मैं तुम्हारे बाबा को क्या जवाब दूँगा?"

'अरे, कहाँ खोये हो भाई" साथवाला युवक उसे हिलाते कह रहा था- 'राजधानी एक्सप्रेस के आने का एनाउंस हो रहा है।"

वह झटपट अपना एयर बैग कंधे पर लटकाते खड़ा हो गया था। कहीं दूर से ट्रेन की सिटी की आवाज आ रही थी।

चितरंजन भारती,

फ्लैट सं0 ,405 -लक्ष्मीनिवास अपार्टमेंट

जगतनारायण रोड, कदमकुँआ, पटना-003 800

मो09401374744 ,7002637813 -

ईमेल- chitranjan.2772@gmail.com